महर्षि वाल्मीकि का चित्रकूट

बलजीत यादव
प्रवक्ता संस्कृत विभाग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय महेन्दगढ़
हरियाणा

भारतवर्ष के बीचोबीच मध्यप्रदेश में सतना मण्डलान्तर्गतचित्रकूट अंचल में प्रकृति की सतरंगी अठखेलियों की अंग नैया कभी तो आपने अवश्य देखी होगी. यहाँ कीप्रशान्त पर्वतीय घाटियों में रहकर झरनों की सुरभि शीतल फुहारों के तले समाधि लगाते हुए और उन्मुक्त विहंगमोंकी भाषा में आरण्यक तथा उपनिषद् गुनगुनाते हुए प्राचीन महर्षियों के पदचिन्ह खोज कर आज भी हम अपना राष्ट्रीय चरित्र सँवार सकते हैं. राम ने लक्ष्मण एवं भगवती सीता के साथ वनवास की अवधि का अधिकांश समय चित्रकूट में बिताया था, ऐसे परम् पावन चित्रकूट को देवलोक का एक भाग कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी.

कुछ समालोचक विद्वान चित्रकूट की बस्तर में परिकल्पना करते हैं, इसमें कोई विरोध की बात नहीं है, समग्र भारतवर्ष तीर्थमय है, संभव है राम वनवास की अवधि में अथवा दिग्विजय काल में वहाँ भी गये हों, परन्तु आदिकवि वाल्मीकि ने वनवास की अवधि में राम को जिस चित्रकूट में अधिकांश समय तक निवास कराया, वह चित्रकूट यही है,आदि कवि की वाणी स्वयं इस तथ्य को प्रमाणित करती है:

दशक्रोशइतस्तात गिरिर्यस्मिन् निवत्स्यति,
महर्षि सेवितः पुष्यः पर्वतः सुदर्शनः
गोलाङ्गूलानुचरितो वानरक्षनिषेवितः,
चित्रकूट इति ख्यातो गन्धमादन सन्निभम्. '

भारद्वाज ऋषि राम से चित्रकूट का मार्ग बताते हुए कहते हैं कि यहाँ से दस कोस की दूरी पर महर्षियों द्वारा सेवित
परम् पवित्र पर्वत है जहाँ आपको निवास करना होगा उस पर बहुत से लंगूर वानर और रीक्ष विचरते रहते हैं, यह पर्वत चित्रकूट के नाम से विख्यात है तथा गन्धमादन के समान मनोहर है अत: चित्रकूट की प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध है, इसका अधिकांश भाग मप्र. सतना जिला में तथा कुछ हिस्सा उ.प्र. के बांदा जिला में स्थित है, मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने परम् मनोहर चित्रकूट एवं उसमें प्रवाहमान मन्दाकिनी को प्राप्त कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव किया, यहाँ तक कि उन्होंने अयोध्या वियोग के दुःख को विस्मृत कर दिया:

सुरम्यमासाद्य तु चित्रकूट,नदी च तां माल्यवती सुतीर्था,
ननन्द हृष्टो मृगपक्षि जुष्टो, जहाँ च दुःख पुरविप्रवासात्.'

महर्षि वाल्मीकि के चित्रकूट में राम प्राण रम गये हैं, अनुज लक्ष्मण के द्वारा पर्णकुटी का निर्माण कराते हैं।
और यह कहते हैं कि मेरी यहाँ निवास करने की हार्दिक इच्छा है, मेरा मन यहाँ रम गया है:

लक्ष्मणानय दारूणि दृढानि च वराणि च,
कुरुष्वावसथं सौम्य वासो मेडिभिरत: मनाः.

महर्षि वाल्मीकि के चित्रकूट से प्रभावित होकर राम स्वयं जानकी से कहते हैं चित्रकूट पर्वत की सैकड़ों विशाल शिलाएँ शोभा को प्राप्त करती हैं जो नीले,पीले सफेद और लाल आदि विविध रंगों से अनेक प्रकार की दिखाई दे रही हैं, नाना प्रकार के फल-फूल युक्त एवं पक्षियों से सेवित विचित्र शिखर वाले इस पर्वत पर मेरा मन रम गया है:

बहुपुष्पफले रम्ये नानाद्विजगणायुते,
विचित्रशिखरे हास्मिन् रतवानास्मि भामिनि.
शिला शैलस्य शोभन्ते विशाल: शतशोऽभितः,
बहुला बहुलर्वर्णे नीलिपीतसितारुणैः

कुछ भी हो आदिकवि का चित्रकूट शोक विमोचन है. मर्यादा पुरुषोत्तम राम चित्रकूट में आचु रम गये हैं,
राज्य से न, हितैषियों से वियोग के दुःख, इस पर्वत चित्रकूट में मुझे व्यथित नहीं करते हैं:

न राज्यधंशनं भद्रे न सुहृदभिर्निभावः,
मनो मे बाधते दृष्ट्वा रमणीयम गिरिम्.'

महर्षि वाल्मीकि के चित्रकूट का अस्तित्व सृष्टि के आरम्भ से है, रामचरित मानस के रचयिता तुलसीदास का दोहा ध्यान देने योग्य है:

मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर क्षेत्र,

समुझेउ नहिं तेहिं बालपन, तब अति रहेउँ अचेत,

स्कन्दपुराण में लगभग एक दर्जन सूकर क्षेत्र का उल्लेख है.उसमें चित्रकूट भी है. किसी एक सूकर क्षेत्र में तुलसीदास को उनके बाल्यकाल में रामायण की कथा सुनायी गई थी. तुलसी का उस समय बचपन था उसे याद नहीं कर सके. उक्त दोहे के गंभीरार्थ को ध्यान में रखकर यदि चित्रकूट को शूकर क्षेत्र माना जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी. कामदगिरि परिक्रमा में पूरबमुखी मुखारबिन्द के आगे एक छोटी सी मढ़िया में एक जबड़े की मूर्ति है. उसे देखने से स्पष्ट हो जाता है कि यह वाराह का मुख है. थोड़ी दूर आगे पत्थर के बने हुए मन्दिर मिलते हैं जो नरहरिदास के स्मारक माने जाते हैं, उन्हीं के पास नरहरिदास का मंदिर भी है, इसके बाहर एक यज्ञ वेदी है जो नरहरि बाबा की धूनी मानी जाती है, उसके पीछे भाग में सन्त तुलसी ने एक पीपल लगाया था वह आज भी है. तुलसी का जन्म राजापुर में हुआ था. उनका लड़कपन उनकी बुआ के यहाँ व्यतीत हुआ, उनकी बुआ का गाँव चित्रकूट से 8 किमी. दूर हरिहरपुर है, वे हरिहरपुर अथवा राजापुर दोनों स्थान से यहाँ बाबा नरहरिदास के पास आते रहे होंगे,बाल्यकाल में अन्य सूकर क्षेत्रों में जाना उनका असम्भव था, इन सब तथ्यों पर विचार करने से चित्रकूट को सकर क्षेत्र कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी.

महर्षि वाल्मीकि का चित्रकूट अनादिकाल से शरणामत पालक रहा है. राम यहाँ 12 वर्ष वनवास दिए, यह भूमि ब्रह्मा जी की यज्ञ स्थली रही,इसका उल्लेख चित्रकूट माहात्म्य में है,यह राजा नल के भी दुर्दिन में उनकी संगिनी रही,अत्रि अनसूया की तपस्थली है, अनसूया के द्वारा यहीं परत्रिदेव शिशु बना दिये गये थे, तद्नन्तर उमा रमा ब्रह्माणी द्वारा अनसूया से निवेदन करने पर उनके पति अपने वास्तविक रूप को प्राप्त किये थे, श्रीमद्भागवत के अनुसार चित्रकूट से 30 कि.मी. दूर धारकुण्डी आश्रम में विद्यमान अघमर्षण तीर्थ है, दक्ष प्रजापति ने सृष्टि की वृद्धि के लिए यहाँ भगवान हरि की तपस्या की थी.

तम् बृंहितमालोक्य प्रजासर्ग प्रजापतिः,
विन्ध्यपादानुपज्य सोऽचरद् दुष्करं तपः,
तत्राघमर्षणं नाम तीर्थ पाप हरं परम्,
उपस्पृश्यानुसवनं तपषातोषयद्धहरिम्.'

भगवान हरि ने पञ्चजन्य प्रजापति की कन्या असिक्नी को दक्ष के लिए पत्नी के रूप में प्रदान किया और यह कहा कि दक्ष अभी तक मानसी सृष्टि होती थी अब मेरी माया से स्त्री पुरुष के संयोग से प्रजा उत्पन्न होगी, विन्ध्याचल के निकटवर्ती पर्वतमाला में अघमर्षण तीर्थ है, धारकुण्डी के अघमर्षण के अलावा और कोई नहीं है.अतःचित्रकूट भूमि का सृष्टि रचना में भी बहुमूल्य योगदान है. वनवास काल में महाराज युधिष्ठिर ने अपने बन्धुओं और द्रोपदी सहित चित्रकूट में निवास किया,उन्होंने यहीं पर एक महापूजन द्वारा यज्ञ सिद्धि का लाभ प्राप्त किया था, महर्षि वाल्मीकि का चित्रकूट शरणागतवत्सलता के लिए सदा से आदर्श रहा है, वस्तुतः चित्रकूट में ऐश्वर्या के साथ त्याग का और तपस्या के साथ प्रेम का सम्मिलन होने से शौर्य का जन्म होता है जिससे मनुष्य का सब प्रकार की पराजय से उद्धार हो जाता है:

प्रायो विपत्ति समय शरणागतानां,
रक्षां करोति सततं भूवि मानवानाम्,
यदर्शनेन मनुजोलभते सुशान्तिं,
लोकेश विश्रुत गिरिः किल चित्रकूटः 'स्वोप ज्ञ'.

राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त की वाल्मीकि के चित्रकूट के विषय में निम्नलिखित पंक्तियाँ सर्वदा गुंजायमान होती रहेंगी:

क्या सुन्दर लता वितान तना है मेरा,
पुंजाकृति गुंजित कुंज घना है मेरा ,
जल निर्मल पवन पराग सुना है मेरा,
गढ़ चित्रकूट दृढ़ दिव्य बना है मेरा,
प्रहरी निर्झर परिखा प्रवाह की काया,
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया.?

संदर्भ सूची

1) वा.मी.रामायण अ.का.54 -28.29
2) वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड 56-35
3) वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड 56 -19
4) वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड 94 -16 -20.
5) वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड 9416120
6) तुलसीदास रामचरित मानस-बालकाण्ड
7) श्रीमद्भागवत 6-4, 20-21
8) स्वोपज्ञ 9. मैथिलीशरण गुप्त - साकेत.